विनय के पद (तुलसीदास)

कवि परिचय

→ गोस्वामी तुलसीदास भक्तिकाल की सगुण धारा की राम भक्ति शाखा के मुख्य प्रवर्तक माने जाते है। गुरु नरहरि दास इनके गुरु थे, जिन्होंने इन्हें वेद पुराण तथा अन्य शास्त्रों का अध्ययन करवाया। तुलसीदास राम के अनन्य भक्त थे। संवत 1631 में 'रामचरितमानस' की रचना प्रारंभ की। तुलसीदास की भाषा ब्रज और अवधी दोनों ही है। 'दोहावली', 'गीतावली', 'कवितावली', 'विनयपत्रिका', 'हनुमान बाहुक' आदि इनके प्रमुख ग्रंथ है। 'रामचरितमानस' इनका सर्वाधिक लोकप्रिय ग्रंथ है। इन्हें हिंदी जगत का सूर्य कहा जाता है।

☆ ((1532 — 1623) जन्म उत्तर प्रदेश के बाँदा जिला

सरिस - समान

द्रवै - करुणा करते है।

जोग - योग

जतन - यत्न

महतारी - माता

कंत - पति

सुहृद - संबंधी

सकुच सहित - संकोच के साथ

बैदेही - सीता

कोऊ नाहिं - कोई नहीं

अरप - अर्पण

बिराग - वैराग्य

ग्यानी - ज्ञानी

तज्यो - छोड़ दिया

ब्रज बनितहि - ब्रज की गोपियाँ

अंजन - काजल, सुरमा

कृपानिधि - दया के सागर

क) 'ऐसो को उदार जग माही' पंक्ति के आधार पर किसकी उदारता की बात की जा रही है ? उनकी उदारता की क्या विशेषताएँ हैं ?

→ उपर्युक्त पंक्ति में कवि तुलसीदास अपने आराध्य देव श्रीराम की उदारता की बात की जा रही है। कवि के अनुसार राम जैसा दयालु और कोई नहीं। किसी की कृपा पाने के लिए उसकी सेवा करनी पड़ती है परंतु श्री राम दीन-दुखियों पर उनके द्वारा सेवा किए बिना ही कृपा करते हैं जो गति बड़ी मुनियों को सद्गति दे देते हैं। जैसे गिद्ध और शबरी को दी।

ख) तुलसीदास किसे तथा क्यों त्यागने को कह रहे हैं ?

→ तुलसीदास जी कहते हैं कि जो व्यक्ति श्रीराम-सीता के प्रति अनुराग नहीं है, चाहे वह व्यक्ति अपना कितना ही प्रिय क्यों न हो, उसे परम शत्रु समझकर त्याग देना चाहिए क्योंकि श्रीराम-सीता के विरोधियों से प्रेम करने तथा संबंध रखने पर हानि ही होती है।

ग) 'अंजन कहा आँख जेहि फूटै' पंक्ति द्वारा